بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 19.12.25

निश्चित ही तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल ﷺ में दिव्य उदाहरण है।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 19 ,1404 हश) 19.12. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने सूरः अह्ज़ाब की आयत स. 22 की तिलावत की तथा उसका अनुवाद पेश करते हुए फ़रमाया कि निःसन्देह तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल ﷺ में नेक नमूना है हर उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और आख़रत के दिन पर विश्वास रखता है और अल्लाह को प्रतिपल याद रखता है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत आयशा रज़ी. से किसी ने पूछा कि आँहज़रत ﷺ के नैतिक आचरण एवं आप स. के शुभ स्वभाव के विषय में कुछ बताएं तो हज़रत आयशा रज़ी. ने उत्तर दिया कि क्या तुमने क़ुरआने करीम नहीं पढ़ा? इसमें तो अल्लाह तआला ने स्वंय आप स. के नमूने की गवाही दी है, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है- وَاِنَّکَ لَعَلٰی خُلُقٍ عَظِیۡمٍ कि ऐ रसूल! निश्चित ही तू शिष्टाचार के उच्चतम स्तर पर है।

अतः नमूने तो वही बना करते हैं जो किसी चीज़ के उच्चतम स्तर पर हों, जहां तक आँहज़रत

ﷺ का सम्बन्ध है, चाहे ख़ुदा तआला के अधिकारों का प्रश्न हो अथवा प्राणियों के अधिकारों का, आप स. इन दोनों में वह उच्चतम स्तर रखते हैं कि जिसकी गवाही अल्लाह तआला ने दी है। इसी कारण अल्लाह तआला ने हमें फ़रमाया कि यह रसूल स. तुम्हारे लिए उदाहरण है, केवल इसकी बातें ही न सुनो बल्कि उन बातों के अनुसार अमल भी करो, ईमान ले आना काफ़ी नहीं, और जब तुम अमल करोगे तो निश्चय ही तुम वह स्तर प्राप्त कर सकोगे जिसके लिए मैंने यह रसूल भेजा है। अतः यह वह स्तर है जो आँहज़रत ﷺ का है और आँहज़रत स. ने ख़ुद भी फ़रमाया कि तुम मेरी सुन्नत का अनुसरण करो, मेरे पदचिन्हों पर चलो, क्यूंकि अल्लाह तआला ने मुझे तुम्हारे सुधार के लिए भेजा है। आप स. फ़रमाते हैं कि नैतिक आचरण की चरम सीमा पर मुझे अवतरित किया गया है। अतएव नैतिक आचरण को वही सम्पूर्ण करता है जो इन सब गुणों का धारक हो और उसमें समस्त विशेषताएं पाई जाती हों।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी. ने क़ुरआन की तफ़सीर की प्रस्तावना में, तथा हमारी सीरत की किताबों में भी आप स. के शिष्टाचार एवं जीवन चरित्र के बारे में बातें मौजूद हैं। इनमें से कुछ आज मैं बयान करता हूँ तथा भविष्य में जब भी अवसर होगा इनको सविस्तार भी बयान करता जाऊँगा।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि पहली बात तो अल्लाह तआला का हक़ है, अर्थात अल्लाह तआला की इबादत का अधिकार है। इसमें हमें आँहज़रत ﷺ का क्या तरीक़ा दिखाई देता है? हम देखते हैं कि रसूले करीम स. का पूरा जीवन ईश प्रेम में डूबा हुआ है, बावजूद इसके कि आप स. पर नई शरीअत को जारी करना तथा लोगों की तरबियत करने जैसी जटिल ज़िम्मदारियां थीं, परन्तु आप स. अल्लाह तआला के हक़ को कभी नहीं भूले। यह अति महत्त्वपूर्ण एवं बड़ी बात है। इसी बीच आप स. को कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा, लड़ाइयों पर भी जाना पड़ा, दुश्मनों ने हमले भी किए, किन्तु अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा करने में आप स. ने कभी कमी नहीं की। अतः यह वह सुन्दर नमूना है जो हमारे सामने भी है कि हम हर हाल में अल्लाह तआला को सामने रखें, और जब हम अल्लाह तआला को सामने रखेंगे तो हमारी विभिन्न समस्स्याओं का निवारण स्वंय होता चला जाएगा। लोग अपने कष्टों के लिए तो दुआ करते हैं परन्तु अल्लाह तआला का हक़ अदा नहीं करते इस लिए फिर इंसान वंचित रह जाता है।

आप स. की इबादतों के स्तर क्या थे? आँहज़रत ﷺ आधी रात बीतने पर ख़ुदा तआला की इबादत के लिए खड़े हो जाते थे, और इसकी गवाही अल्लाह तआला ने भी दी है। इसी प्रकार आप स. के पवित्र जीवन में यह घटना भी मिलती है कि जब आप स, अल्लाह तआला का कलाम सुनते तो प्रेम भाव से आप स. की आँखों में आंसू आ जाते, विशेषतः वे आयतें जिनमें आप स. को अपने दायित्वों की ओर ध्यान दिलाया गया है। एक बार आप स. के आदेश पर हज़रत अब्दुल्लाह

बिन मसउद रज़ी. ने सूरः निसा पढ़ कर सुनानी शुरू की और पढ़ते पढ़ते इस आयत पर पहुंचे कि, अर्थात उस समय कैसी दशा होगी जब हम हर क़ौम में से उसके नबी को उसकी क़ौम के सामने खड़ा करके उस क़ौम का हिसाब लेंगे, और तुझ को भी तेरी क़ौम के सामने खड़ा करके उसका हिसाब लेंगे, तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बस करो, बस करो। सहाबी रज़ी. कहते हैं कि मैंने आप स. की ओर देखा तो आप स. की आँखों से टप टप आंसू बह रहे थे। इतनी मानसिक पीड़ा आप स. को अनुभव हुई और उस समय निःसन्देह आप स. को क़ौम की भी चिन्ता हुई होगी कि मेरी क़ौम कोई ऐसी हरकत न कर बैठे जो अल्लाह तआला की नाराज़गी का कारण बने और फिर मुझे उनके विरुद्ध गवाही देनी पड़े।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि नमाज़ की पाबंदी देख लें, इसका आप स. को इतना अधिक ध्यान था कि रोग की अवस्था में भी, अन्तिम दिनों में जब नमाज़ लेट कर पढ़ने की आज्ञा होती है, इतिहास में आता है कि आप स. लोगों का सहारा लेकर मस्जिद की तरफ़ गए। इसी प्रकार आप स. पीड़ादायक इबादत भी पसन्द नहीं करते थे, बावजूद इबादतों की ओर इतना अधिक ध्यान दिलाने के, आप स. कहते थे कि इबादत सुविधा पूर्वक होनी चाहिए। आप स. ने फ़रमाया कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि उतनी देर इबादत किया करे कि जब तक उसके दिल में इबादत के प्रति प्रेम रहे, जब वह थक जाए तो बैठ जाए, कष्ट वाली इबादत कोई लाभ नहीं देती।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आजकल के लोगों के लिए यह भी बता दूं कि इसका यह मतलब भी नहीं कि दुविधा में डालने की आवश्यकता नहीं है, इस लिए जल्दी जल्दी नमाज़ पढ़ो और यह एक भार है, अदा करो, गले से उतारो। कई बार लोग मुझे भी सवाल पूछ लेते हैं कि नमाज़ किस तरह पढ़नी चाहिए? तो नमाज़ इसी प्रकार पढ़नी चाहिए कि इसे संवार कर पढ़ो।

ख़ुदा तआला के समक्ष आप स. की विनय अपनी चरम सीमा पर थी कि जब लोगों ने आप स. से कहा कि आप तो अपने अमल के ज़ोर से ख़ुदा तआला की कृपाओं को प्राप्त कर लेंगे, क्यूंकि अल्लाह तआला ने आपको प्रमाण पत्र दे दिया है और आप स. के सुन्दर आचरण को मुसलमानों के लिए अमल का एक स्तर निश्चित कर दिया है तो आप स. ने फ़रमाया कि नहीं, नहीं, मैं भी ख़ुदा की कृपा से ही क्षमा किया जाऊँगा। फिर आप स. ने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि अपने कामों में नेकी पर रहो तथा ख़ुदा तआला की निकटता के मार्ग खोजते रहो, और फ़रमाया कि तुममें से कोई व्यक्ति अपनी मृत्यु की अभिलाषा न किया करे, यदि वह नेक है तो जीवित रह कर अपने दिव्य कर्मों में और भी बढ़ जाएगा, और यदि वह बुरा व्यक्ति है तो जीवित रह कर उसे अपने पापों से तौबा करने का समय मिल जाएगा, यह एक अति महत्त्वपूर्ण उपदेश है जिसे हमें याद रखना चाहिए कि कभी मौत की आरज़ू नहीं करनी चाहिए।

आप स. के कर्मों के विषय में हज़रत आएशा रज़ी. एक स्थान पर फ़रमाती हैं कि जीवन में

कभी कोई ऐसा अवसर नहीं आया कि रसूलुल्लाह ﷺ के सामने दो रास्ते खुले हों और आप स. ने इन दोनों रास्तों में से सरल रास्ता का चयन न किया हो, किन्तु इस शर्त के साथ कि सरल मार्ग अपनाने में कोई पाप का अंश न पाया जाए।

मानव जाति से जहां तक व्यवहार का सम्बन्ध है, उसमें अपने घर से शुरू करते हैं। आप स. का पत्नियों के साथ क्या व्यवहार हुआ करता था? अति स्नेहपूर्ण एवं न्याय संगत होता था। यदि आजकल के लोग भी इसको समझ लें तो घरों के अनेक झगड़े एवं फ़साद दूर हो जाएं।

आप स. की सहनशीलता की ऐसी अवस्था थी कि जब ख़ुदा तआला ने आप स. को बादशाहत प्रदान कर दी तब भी आप स. प्रत्येक की बात सुनते थे, यदि कोई कठोरता भी दिखाता तो आप स. चुप रह जाते थे। कभी कभी लोग आप स. का रास्ता रोक कर खड़े हो जाते और अपनी आवश्यकताएं बयान करनी शुरू कर देते, उस समय तक आप स. खड़े रहते जब तक वह अपनी बात पूरी न कर लेते, फिर आप स. आगे चल पड़ते।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि ये तथा और अनेक बातें हैं आँहज़रत ﷺ के जीवन की, आप स. के न्याय, भावनाओं का सम्मान, निर्धनों का ध्यान रखने के विषय में, जो हमारे लिए नमूना हैं। अतः अल्लाह तआला हमें यह सामर्थ्य प्रदान करे कि हम आप स. के आचरण पर चलते हुए वास्तविक मुसलमान बनने का प्रयास करें, और आप स. के इस सन्देश को जगत में पहुँचाने वाले भी हों, ताकि दुनिया को भी हम आप स. के झंडे तले लाने वाले हों, अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اللھم صلی علی محمد وعلی اٰل محمد وبارك وسلم انك حمید مجید

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने मुकर्रम लईक़ अहमद ताहिर साहब मुरब्बी सिलसिला का जनाज़ा, जो मौजूद था, और मुकर्रम सीघा जालू साहब नायब सदर, रीजन सेगो, माली का जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई तथा दोनों मृतकों के सदगुणों को बयान फ़रमाया और इनकी मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ نَحْمَدُہٗ وَنَسْتَعِیْنُہٗ وَنَسْتَغْفِرُہٗ وَنُؤْمِنُ بِہٖ وَنَتَوَکَّلُ عَلَیْہِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَیِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ یَّھْدِہِ اللّٰہُ فَلَا مُضِلَّ لَہٗ وَمَنْ یُّضْلِلْہُ فَلَا ھَادِیَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنْ لَّا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحْدَہٗ لَا شَرِیْکَ لَہٗ وَاَشْھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُہٗ وَرَسُوْلُہٗ۔ عِبَادَ اللّٰہِ رَحِمَکُمُ اللّٰہُ اِنَّ اللّٰہَ یَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِیْتَآءِ ذِی الْقُرْبٰی وَیَنْھٰی عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْکَرِ وَالْبَغْیِ یَعِظُکُمْ لَعَلَّکُمْ تَذَکَّرُوْنَ فَاذْکُرُوا اللّٰہَ یَذْکُرْکُمْ وَادْعُوْہُ یَسْتَجِبْ لَکُمْ وَلَذِکْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब